ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-8* November-2020
Anthology : The Research

आदिवासियों में गोदना संस्कार_ एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण

Tattoo Sacrament In Tribes _ One Scientific Vision"

Paper Submission: 15/11/2020, Date of Acceptance: 26/11/2020, Date of Publication: 28/11/2020

प्रियंका साहू
सहायक प्रोफेसर
इतिहास विभाग,
गवर्नमेंट मॉडल कॉलेज,
शाहपुरा, डिंडोरी, भारत

सारांश

आदिवासियों में गोदना भले ही एक श्रृंगार परक संस्कार प्रतीत होता है, परंतु यह अपने अंदर विविध दृष्टिकोणों को समाहित किया हुआ है। सुरक्षात्मक दृष्टिकोण में जहां गोदना वह अभिव्यक्ति है जो जाति चिन्हों के रूप में व्यक्ति को सुरक्षा भाव में संपृक्त करता है। वहीं सामाजिक दृष्टिकोण में यह समुदाय से जुड़ाव की भावनाए समाज में सम्मान प्राप्ति की अवधारणाएं सौंदर्य वृद्धि की अवधारणा, तथा अलौकिक मान्यताओं व विश्वास से संबंधित है। पारंपरिक रूपाकारों में चित्रित किए जाने वाले यह गोदने देवताओं को प्रसन्न करने वाले सौभाग्य को प्रदान करने वाले तथा शरीर को स्वस्थ रखने वाले भी होते है। वहीं वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखें तो गोदना का चिकित्सीय महत्व भी बहुत अधिक हैप्गोदना का प्रयोग शरीर के अनेक स्थानों पर दर्द निवारक के रूप में भी किया जाता है। ऐसे गोदना गोदने के पश्चात अनेक प्रकार की जंगली जड़ी-बूटियों के रस का प्रयोग कर गोदना की भराई की जाती हैं, जिससे दर्द समाप्त हो जाता है। एक्यूपंचर चिकित्सा पद्धति के रूप में हम इसका विकसित रूप देख सकते है।

गोदना विविध जनजातियों में प्रचलित हैं और विविध मान्यताओं के साथ में प्रचलित होते हुए भी इसका महत्व वर्तमान समय मे भी प्रासंगिक बना हुआ है । इसी कारण यह आज वर्तमान में फैशन के रूप में टैटू के रूप में प्रचलित है। गुदने की उपादेयता के परिणाम स्वरुप ही इसका शोधात्मक अध्ययन जनजातियों के एक संस्कार के रूप में ही नहीं अपितु चिकित्सकीय व वैज्ञानिक महत्व के कारण भी किया जाना आवश्यक हैं। उपरोक्त लेख गोदना गोदना विधि, उसके प्रकार, उसका वितरण तथा उसके महत्व का व्याख्यात्मक विवरण है।

Tattooing among tribals may appear to be an adornment rite, but it has contained diverse perspectives. In a protective view, tattooing is the expression that expresses the person in a protective sense in the form of caste symbols. At the same time, in the social perspective, it is related to the feelings of belonging to the community, the concepts of respect in society, the concept of aesthetic growth, and supernatural beliefs and beliefs. These tattoos, depicted in traditional designs, provide good luck to the gods and also keep the body healthy. At the same time, from the scientific point of view, the medical importance of tattoo is also very high. Hapgodana is also used as a pain reliever in many places of the body. After such tattoo, tattooing is done using the juice of many wild herbs, which ends the pain. We can see its evolving form as an acupuncture therapy.

Tattooing is prevalent among various tribes and despite being prevalent with diverse beliefs, its importance remains relevant even in the present times. For this reason, it is presently as fashionable as tattoo. As a result of the usefulness of Gudane, it is necessary to study it not only as a ritual of tribes but also due to its medical and scientific importance. The above article is an explanatory description of the tattooing method, its type, its distribution and its importance.

मुख्य शब्द : अंग चित्रांकन, गोदनाकंन, गोदनहारी, नृतत्वात्मक, प्राचीनतम प्रसाधन, अभिव्यक्ति, अंतर्निहित, परिणिति, चीन्हा, सुवा, जखनादार सूई, संपृक्त, सुरक्षात्मक ।

Organ Painting, Godnakan, Godanhari, Expression, Built-In, Finite, Chinaha, Suave, Gabled Needle, Articulated, Protective.

प्रस्तावना

प्राचीन काल से सामाजिक विकास में विकसित ,अर्ध विकसित या फिर अविकसित समाज ही क्यों ना हो वहां की स्त्रियों में सौंदर्य चेतना अवश्य विद्यमान रहती है। यही सौंदर्य बोध शारीरिक सौंदर्य वृद्धि हेतु गोदना गुदवाने हेतु प्रेरित करता है। वास्तविकता में गोदना वह अभिव्यक्ति है जो जाति चिन्हों के रूप में व्यक्ति को सुरक्षा भाव में संपृक्त करती है। हर व्यक्ति में समुदाय से जुड़ाव की भावना विद्यमान होती है, यही गुदना उसे विश्वास से बांधता है आदिवासियों तथा गैर आदिवासी समाजों में इन चिन्हों के माध्यम से सम्मान प्राप्ति की अवधारणा अपने स्वरूप में नृतत्वात्मक परिणिति है। गोदना गुदवाने में अंगों को सुंदर बनाने की भावना अंतर्निहित होती है, साथ ही साथ अलौकिक मान्यताएं एवं विश्वास का जुड़ाव भी उपस्थित होता है।

त्रगुदनाकंन अवधारणा

जनजातियों में यह मान्यता है कि प्रथम, गोदना स्त्रियों के सच्चे आभूषण है, जो मृत्यु होने पर उसके साथ गमन करते हैं ।१ द्वितीय देवताओं को प्रसन्न करने तथा शरीर को स्वस्थ रखने हेतु गोदना गुदवाना अति आवश्यक है। सौभाग्य के प्रतीक गुदने बाँह, पोहचा, मस्तक, वक्ष, पद, आदि पर गुदवाये जाते हैं । विभिन्न अंगों में गुदने अपने पारंपरिक रूपाकारों में ही निर्मित किए जाते हैं। गोदना लोक संस्कृति की प्रथम पहचान तथा संसार का प्राचीनतम प्रसाधन कहा जाता है।२

डॉक्टर विश्व बंधु शर्मा गुदने का संबंध वीरता से स्थापित करते हुए कहते हैं ,कि कभी–कभी युद्ध करते हुए प्रारंभिक मानव के शरीर पर युद्धाभ्यास के घाव उसके विजय श्री की गाथा का गान करते होंगे ।कालोपरांत उसका शरीर जो अनेक घावों से सुशोभित हुआ होगा जो अपनों के मध्य उसके गौरव व सम्मान में वृद्धि करने वाला हुआ होगा। बस यही से आने वाली नई पीढ़ी ने अपने शरीर को इन्हीं खरोचों को, गोदना के रूप में सजा कर गौरवान्वित अनुभव किया होगा।3

गोदना का विस्तार व नियम

गोदना भारत के उत्तर प्रदेश, बिहार ,राजस्थान ,मध्य प्रदेश और दक्षिण की विभिन्न जनजातियों में प्रथा के रूप में प्रचलित हैं। उत्तर भारत में विवाह के पश्चात 1 वर्ष में गोदना गुदवाना निश्चित किया जाता है ।जबकि अनेक जनजातियों में विवाह से पूर्व ही गुदनांकन अनिवार्य समझा जाता है ।कई क्षेत्रो में आयु के अनुसार गुदनांकन कराया जाता हैं। उदाहरण स्वरुप मध्यप्रदेश की बैगा जनजाति में बालिका के हाथ पर त्रिभुजाकार गुदनांकन किया जाता है। तत्पश्चात युवावस्था में वक्ष पर मोर की आकृति तथा विवाह पश्चात घुटने जंघा तथा पीठ पर चित्रांकन कराना आवश्यक होता है।४ जनजातियों में कुछ जाति सूचक चिन्ह होते हैं। जो उनकी पहचान प्रतीक होने लगते हैं यथा कोल ,भील ,कहार आदि जनजातियों में ये चिन्ह उनकी पहचान प्रदर्शित करते हैं।५

ऑस्टेलिया, न्यूजीलैंड, कंबोडिया, अफ्रीका, थाईलैंड, वर्मा, तथा अरब देशों में सबसे अधिक रुचि पूर्वक बनाने का प्रचार व प्रसार है। गोदनाकंन का स्वरूप विशेष रूप से लोक विश्वास, धार्मिक आस्थाएँ तथा सामाजिक मान्यताओं पर आधारित होता है।६

गुदनांकन के प्रकार

वर्ग विशेष के स्त्रियों में गहनों का अभाव गुदनों के गहनों से तृप्त हो जाता था। वर्गीकरण की दृष्टि से चार प्रकार के गुदनाकंन देखने को मिलते हैं । प्रथम मांगलिक गोदना इसमें कमल, मोर, मछली सिहासन, सूरज, छत्र, स्वास्तिक आदि चिन्हों को उत्कीर्ण किया जाता हैं । द्वितीय रक्षा यंत्र के गोदने में पोंची, नक्षत्र, चक्रव्यूह, अंगूठी आदि का अंकन किया जाता है। तृतीय जादू परक गोदना में बिच्छू सर्प शंख मकड़ा मछली का कांटा आदि का अंकन चतुर्थ पहचान परक गोदना। इन गोदना में विशिष्ट प्रकार के चिन्हो का अंकन किया जाता है।

गुदनांकन विधि

गोदना गुदवाने की प्रथा आदिम जनजातियों में को पीढी दर पीढ़ी स्थानांतरित होती चली आ रही ह। पहले गोदना गुदने का कार्य परिवार की बड़ी–बूढ़ी स्त्रियां करती थीं।जो उन्हें पूर्व पीढ़ी से प्राप्त होता था। कालांतर में कुछ स्त्रियों ने इस कार्य को अपनी जीविका के रूप में निर्मित कर लिया। जो ग्राम– ग्राम भ्रमण कर कन्याओं तथा विवाहित स्त्रियों के देह पर गोदना गोदने का कार्य करती थी । जिन्हें गुदनारी या गोदनहारी आदि नामों से जाना जाता हैं।

गोदना गोदने हेतु सुवा नामक सुई का प्रयोग किया जाता है। गोदनकंन हेतु दो–तीन या इससे अधिक सुईयो को एक साथ विशेष ढंग से बांधकर सरसों के तेल में चिकना कर लिया जाता है ।व गोदना में रंग भरने हेतु प्रयुक्त होने वाली स्याही या काजल को सरसों, काले तिल अथवा जटंगी के तेल से बनाया जाता है। इसे काजल बिठाना कहते हैं, इसके पश्चात को गुदनारी चीन्हा अर्थात विविध आकृति निर्मित कर उसमें काजर में डूबी जखनादार सूई से उसमें रंग भरा जाता है।७

गोदना को संक्रमण से सुरक्षित रखने हेतु हल्दी व सरसों के तेल का लेप लगाया जाता है 1 सप्ताह पश्चात गोदना वाले स्थान पर नई त्वचाउत्पन्न हो जाती है। गोदना का प्रयोग शरीर के अनेक स्थानों पर दर्द निवारक के रूप में भी प्रयोग किया जाता है ।ऐसे गोदना गोदने के पश्चात अनेक प्रकार की जंगली जड़ी बूटियों के रस का प्रयोग कर गोदना की भराई की जाते हैं जिससे दर्द समाप्त हो जाता है। एक्यूपंचर चिकित्सा पद्धति के रूप में हम इसका विकसित रूप देख सकते है।

अध्ययन का उद्देश्य

वर्तमान समय में आदिवासियों के जीवन के विषय में जानने की उत्सुकता, केवल सतही ज्ञान हेतु नहीं अपितु उनके रीति–रिवाजों तथा संस्कारों के पीछे विद्यमान मान्यताओं को भी जानने की होती हैं।आदिवासियों में संस्कारों के पीछे ना केवल श्रृंगारपरक, सुरक्षात्मक दृष्टिकोण विद्यमान होता है, अपितु उनके संस्कारों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी विद्यमान होता है। यही वैज्ञानिक दृष्टिकोण यह व्यक्त करता है कि भले वह रहन–सहन

तथा विकास के मापदंडों में पिछड़े प्रतीत होते हैं परंतु वे ज्ञान के विषय में समय से आगे थे।गोदना भी केवल श्रृंगारपरक संस्कार नहीं है, अपितु इसके वैज्ञानिक दृष्टिकोण विद्यमान है।इस लेख में गोदना के विषय, प्रकार, वर्गीकरण, व उनमें अंतर्निहित भावनाओं को व्यक्त किया गया हैं। साथ–साथ उनका वैज्ञानिक रूप से महत्व प्रदर्शित करना जिससे आदिवासियों के ज्ञान, उनकी दूरदर्शिता तथा गोदना की समसामयिकी प्रासंगिकता को प्रदर्शित करना इस लेख का प्रमुख उद्देश्य है।

निष्कर्ष

निष्कर्षत गोदना मानव के आदिम रूप से संबंध वह अंग चित्रांकन है जो कलात्मक सुरुचि से संबंधित होने के साथ–साथ लोग विश्वास से आच्छादित हैं। गुदना गुदवाने की असहनीय पीड़ा को सहन करते हुए जनजातीय समाज पीढ़ी दर पीढ़ी गोदनाकंन धारण करता है। मानव अपनी किसी प्रबल इच्छा शक्ति को इन गोदना के अंकन प्रतीकों में तलाशता रहता है। गोदना को आदिम समाज ने कामेच्छा की पूर्ति करने वाला सामाजिक प्रतिष्ठा एवं पहचान बनाने वाला ,जादुई प्रभाव वाला ,आत्मिक एवं आध्यात्मिक सुख प्रदान करने वाला ,पराशक्तियों को सुरक्षा हेतु सुरक्षा के लिए आकर्षित करने वाला, काया को निरोगी रखने वाला ,आभूषणों के अभाव में सौंदर्य वृद्धि करने वाला तथा पृथ्वी से स्वर्ग तक चुंबकीय आकर्षण रखने वाला एवं शारीरिक सज्जा के अमिट चिन्ह के रूप में मान्य व प्रभावकारी हैं।८ गोदना आधुनिक युग में फैशन के रूप में इसका प्रचलित हैं, भावनाओ में परिवर्तन के साथ ही सही गुदना आज भी प्रसांगिक बना हुआ है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *शेख गुलाब ,गोंड मध्य प्रदेश आदिवासी लोककला, पृष्ठ क्रमांक 72*
2. *गुप्त नर्मदा प्रसाद लोक चित्रण का उद्भव विकास व प्रतीक, चौमासा पत्रिका 2002 ,पृष्ठ क्रमांक 14,–15*
3. *शर्मा विश्व बंधु, गोदना हरियाणा लोक संस्कृति का दर्पण हरिगंधा पत्रिका ,नवंबर –दिसंबर 1963 पृष्ठ 63*
4. *तिवारी शिवकुमार, भारत की जनजातियां, पृष्ठ क्रमांक 98*
5. *भाटिया हर्ष नंदिनी, ब्रज लोक नारी कौ अलंकरण ,–गोदना ब्रज की कला और संस्कृति ,पृष्ठ क. 273*
6. *भाटिया हर्ष नंदिनी, , ब्रज की कला और संस्कृति ,पृष्ठ क. 279*
7. *बहादुर बजरंग ,जनजातियों में गोदना परंपरा, चौमासा पत्रिका 2001, पृष्ठ 51*
8. *तिवारी शिवकुमार, मध्य प्रदेश की जनजातीय संस्कृति पृष्ठ क्रमांक ,220 –224*